Impact Factor 2.147

ISSN 2349-638x

Reviewed International Journal

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly Publish Journal

VOL-III | ISSUE- III | Mar. | 2016

Address
•Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
•Tq. Latur, Dis. Latur 413512
•(+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
•aiirjpramod@gmail.com

Website
•www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

राजेंन्द्र सिंह बेदि के अफसान्वी अदब मे औरतों का दर्द

प्रा.कु.फरहिना शीरीन नसीरोद्दीन
उर्दु विभाग प्रमुख
स्व.पंचफुलाबाई पावडे कला व वाणिज्य
महिला महाविदृयालय, वरूड,
जि.अमरावती

प्रस्तावना :–

उर्दु जुबान व अदब की तारीख में प्रेमचंद के बाद आने वालि नसल के अफसाना निगारों में कृष्णचंद, राजेंद्रसिंह बेदि, अस्मत चुगताई, और सादत हसन मॅटो को बहुत ऊॅचा स्थान प्राप्त है उन्हे अपने जमाने के उर्दु अफसान्वी अदब की इमारत के चार स्तंभ समझा जाता है जिनपर उर्दु अफसान्वी अदब की इमारत खडी है। राजेंन्दसिंह बेदी ने जिंदगी के वाक्यात को अफसाना बनाया उनके अफसानो मे दर्दमन्दी का इजहार है। यह वाक्यात हमारी रुह को छु लेतें है। बेदी के अफसानो को पढने के बाद इन्सान व इन्सानियत के बारे मे हमारे ऐतेमाद में इजाफा होता है और इन्सानो से हमारी महोब्बत बढती है। बेदी के अफसानो मे जिन्स या औरत का जिकर दुसरे अफसाना निगारो से अलग है। बेदी ने अपने अफसानो में औरतो के दर्द, औरतो पर होनेवाले अत्याचार और औरतो की समस्याओं को इतनी खुबसुरती और बारीकी के साथ पेश कीया है कि बेदी को औरतो का अफसाना निगार कहा जाये तो गलत ना होगा। मानवसमाज में पुरुष के साथ–साथ स्त्री भी बुनियादी दर्जा रखती हैं लेकिन हम देखते है की महिलाओं पर आऐ दिन अत्याचार कीये जातें है। हमारे राजनेताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं महिला संघटनो के साथ–साथ हमारे लेखको ने भी नारी चेतना लाने एवंम उन्हे अपने अधिकारो से अवगत कराने मे अहम भुमिका निभायी है। उन्ही लेखको में राजेंन्द्रसिंह बेदी का नाम सुर्खियो में नजर आता है। उन्होने अपने मुनफरीद अंदाज–ए–तहरीर के माध्यम सें औरतो की समस्याओ और उनकी दिली कैफियत की तस्वीर खिंची है। राजेंन्दसिंह बेदी ने उन गरीब मजबुर औरतो के बारे मे भी दिल खोलके लिखा है जो कडाके की सर्दी मे सिर्फ एक कपडा पहने चालीस फिट रोडी कुट डालती है, जिनका दुध उनके बच्चे और लहु ठेकेदार पी जाते है। जिनके बाल और हड्डिया उनके आदमी चिचोडते है। बेदी ने बडी खुबसुरती और नफासत से 'लाजवंती' और 'जोगया'जैसी मासुम लडकीयो के जखमी दिलो पर मरहम रखा। बदमिजाज बिवियों और शराबी आदमीयो को बेनकाब किया। अफसाना 'लाजवंती' के जरिये यह साबित कर दिया के औरत गिरकर भी और बढ कर भी औरत ही रहना चाहती है। वह देवी बनके जिंदगी के कुरब से अलग रहेना नही चाहती।

राजेंद्रसिंह बेदी के अफसानो में औरत :–

राजेंद्रसिंह बेदी ने जिंदगी के वाक्यात को अफसाना बनाया है उन्होने अपने अफसानो मे जो इन्सान दोस्ती के नमुने पेश किए है उन में दर्दमन्दी का इजहार है। यह अफसाने हमारी रूह को छु लेते है बेदी अलमिया के अफसाना निगार नहीं है लेकीन उन के अफसानो के खुशगवार

अंजाम भी हमारी आखों को भिगो देते है। बेदी के अफसानो को पढने के बाद इन्सानो से हमारी मोहब्बत बढती है। दरअसल बेदी ने इस राज को पा लिया था कि मनुष्य अपने उपर नही रोता उसका असल गम दुसरो का गम है वह मॉ–बाप, बहन, भाई, बिवी, बच्चे, दोस्तो के लिए रोता है यही नही उनके लिए भी रोता है जिनका हमारी जिंदगी मे कोई वजूद नही होता जो सिर्फ किस्से और कहानियो और अफसानों मे बसते है या जो सिनेमा के परदो पर दिखाई देते है। बेदर्दी से लिखना, कुरेदना, बेदर्दी से बरतना और दर्दमंदी से उनको कागज पर उतार देना राजेंद्रसिंह बेदी का एक बडा कारनामा है। दुखदर्द को शिददत से महसुस करना, अपने आपको किरदारो में समोदेना बेदी की सबसे बडी खासीयत है और यही चिज उन्हे अपने जमाने के दुसरे अफसाना निगारो से अलग करती है। किरदार निगारी मे उनको कमाल हासीन था। वह अपनी किरदारो से गुफतगु करने के साथ–साथ उनके जरिये भी बात करते है। वे कभी–कभी सिर्फ एक वाक्य ही से हमारे दिल और दिमाग को अपने काबु मे ले लेते है।

बेदी के अफसानो ओर नावेलो मे मध्यम वर्ग और निमनस्तर वर्ग कि हिन्दुस्तानी औरत के चरित्र कि जो तस्वीरकशी की है वह उनके अफसाना निगारी के फन का नुकता–ए–उरूज कहलाता है। बेदी ने अपने अफसानो में हिन्दुस्तानी औरत के जजबात व अहसासात, तमन्नाओं और आरजुओं की सच्ची तस्वीर पेश की है। उनके अफसाने हिन्दुस्तानी औरतो की नफसियात का आईने है। एक तरफ हिन्दुस्तानी औरत दुनिया की दुसरी औरतो की तरह एक ही वक्त मे शोला और शबनम है तो दुसरी तरफ सबर, बरदाशत और कुर्बानी की मुर्ती है। दुसरे चाहे उसे देवि कहे लेकिन वह खुद को औरत कहलाना ही पसंद करती है। बेदी के यहॉ भोला से बबल की कहानी तक 'ग्रहन', 'अगवा', 'कोखजली', 'गर्मकोट' और 'एक चादर मेलीसी' मे औरत मरकजी किरदार है लेकीन यह किरदार अफसान्वी ना होते हुए एक नामयाती हकिकत है। औरत के रूप बेशुमार सही मगर घुम फिरकर वह मॉ ही रहती है। मर्द के बनाए हुए समाज कि जंजीरो मे जकडी हुई इस औरत मे वह जादू है जो चतुर और जालीम को भी थर्रा देती है। बेदीने औरत के इसी रूप को पैश किया है। 'कोखजली' इस अफसाने में बेदी ने औरत के बारे मे अपने खयाल का यु इजहार किया है ''दुनिया में कोई औरत मॉ के सिवा नही–बिवी भी कभी मॉ होती है और बेटी भी मॉ, तो दुनिया में मॉ और बेटे के सिवा कुछ नही–औरत मॉ और मर्द बेटा ..... मॉ खालिक और बेटा तखलिक–''।

राजेंद्रसिंह बेदी का अफसाना 'अपने दुख मुझे दे दो' को पहली बार पढनें के बाद मो. आल अहेमद सरूर ने बेदी को लिखा था कि उर्दु कहानी पटरी से उतर गयी थी तुमने इसे फिर पटरी पर ला खडा कर दिया। 'अपने दुख मुझे दे दो' कि इंदु एक अजीम औरत है वह अपने पती से शादी की पहली रात उसके सारे दुख मागंते हुए कहती है की अपने दुख मुझे दे दो। उसका पती मदन यह सुनकर हैरान रह जाता है और सोचता है कि यह अनपड औरत कोई रटा हुआ फिकरा तो नही। इंदु शादी के बाद अपने ससुराल को अपना सबकुछ समझकर सबके दुख सुख मे बराबर कि शरीक रहती है औ कुरबानिया देती रहती है वह अपने घर के कामो मे व्यस्त रहने के कारण इच्छा होने पर भी अपने पती मदन को वह समय नही दे पाती जो मदन का दिल चाहता है और मदन बाजार का रास्ता अपना लेता है। जब पडोसन से इंदु को यह बात मालुम होती है तो उसे लगता है कि वह खाली हाथ हो चुकी है।

रोती रही अगर तो मै मजबुर थी बहुत,
वह रात काटनी कोई आसान भी ना थी

बाकर मेहदी इस अफसाने पर रोशनी डालते हुए कहते है की इंदु कुरबानी की एक ऐसी तस्वीर है जिसमे औरत मर्द से सिर्फ उसके दुख मांगती है। वह एक मध्यम वर्ग के घराने मे अपनी खिदमत से अपने ससुर बाबु धनीराम की अच्छी बहुरानी, अपने पती मदन की प्यारी बिवी और अपनी छोटी ननद की प्यारी भाभी है। मगर वक्त का आहिस्ता लेकिन तेज चक्र उस को मॉ के रूप मे बदल कर मदन के लिए उसमें दिलचस्पी कम देना है और वह अपनी राते कही ओर गुजारने लगता है। तब इंदु अपने आप को तवाऐफ की तरहा सजाती है ता के मदन वापस आजाए और वह वापस आ जाता है मगर इंदु को लगता है की अब तो मेरे पास देने के लिए कुछ भी नही रहा। डॉ. जोए. अन्सारी इस अफसाने के बारे कहते है की औरत अपना सब कुछ देकर खाली हो जाती है। वह सबके गम अपना कर अपना गम किसे दे ?

बेदी की औरत अपने आप को औरत मनवाना चाहती है देवि नही। उसको कपडे की गैंद की तरहा और रबर की गुडिया की तरह इस्तेमाल किजीए वह कुछ नही कहेगी लेकिन जैसे ही आप ने उसे देवि बनाया और वह बागी हुई। राजेंद्र सिंह बेदी का अफसाना 'लाजवंती' अपहरन कि हुई औरत की दास्तान है। इस अफसाने की औरत बेदी के दुसरे अफसानो से मुखतलिफ है वह खुबसुरत है छुईमुई के पौदे की तरह नाजुक है मार खा कर भी खुश रहती है। उस का पति सुंदरलाल समझदार और हमदर्द इन्सान है। जब फिसादात के दौरान लाजवंती को अगवा कर लिया जाता है तो वह इस खुनी तुफान के बाद मगविया औरतो के बसाव की छोटी सी तहरीक चलाता है और एक दिन लाजो वापस आ जाती है। लाजवंती मगविया औरत की कहानी के साथ एक खालिस नफसियाती अफसाना भी है– जब सुंदरलाल को यह खबर मिलती है की लाजो वापस आ गई है तो वह एक अजीब कश्मकश में मुबतेला हो जाता है के अब वह क्या करे कभी दरवाजे की तरफ कदम बढाता, कभी पिछे लोट जाता है– उस का दिल चाहता है के रोए लेकिन फिर वह अपने जज्बात को काबु में करता है और चोकी कल्पा की तरफ बढता है जहा मगविया औरतो को वापस लोटाया जाता है। अब सुंदरलाल अमृतसर सरहद पर लाजो के सामने खडा है। दोनो के अंदर नफसियाती कश्मकश की जंग जारी है। दोनो अपनी–अपनी नफसियात के साथ एक दुसरे को घुर रहे है। एक तरफ समाज है जो सुंदरलाल के फेसले का इन्तेजार कर रहा है दुसरी तरफ लाजो का भोलापन जो जाहिर कर रहा है की इसमे मेरा क्या कुसुर है। सुंदरलाल लाजो को लेकर अपने घर आजाता है। लोग यह समझते है की लाजो बस गई। लेकीन सच्चाई बिलकुल उलट है सुंदरलाल की नजर में लाजो देवी का रूप ले चुकी है। अब वह लाजो को मारता भी नही है और दिल ही दिल में उस की पुजा करता है। उसकी पत्नी लाजो जो दुसरे मर्द के साथ रह कर आई है सुंदरलाल उसे उपरी तौर से तो दिल में बसा लेता है पर जज्बाती सतह लाजो को पत्नीका मुकाम नही दे पाता जब लाजो को इस बात का अहसास होता है की वह देवि बन गई है और घर मे भी बस गई है। तो उसे समझने मे देर नही लगती के वह हकीकत मे बस के भी उजड गई है। औरत गिर के भी और बड कर भी औरत ही रहना चाहती है। वह देवि बन कर जिंदगी के कुरब से अलग नही रहना चाहती। बेदी का यह अफसाना लाजवंती एक लाजवाब अफसाना है।

घर मे बाजार मे बेदी का यह अफसाना स्त्री–पुरूष समता को दर्शाता है। अफसाने की दुर्शी एक मध्यम वर्ग के खुशहाल खानदान की पढी लिखी लडकी है। वह अपने बाप, भाई और पति की कमाई पर अपना बराबरी का हक समझती है। इसे अपने पति से पैसे मांगते हुए शरम आती है। शादी से पहले भी वह अपने पिताजी की कोट से अपनी जरूरतो के लिए पैसे ले लेती थी। उस की यह आदत उस के अन्दर बराबरी का जज्बा पैदा कर देती है। शादी के बाद भी वह

चाहती है की उस का पति खुद उस की जरूरतो का ख्याल रखे। उसे बराबरी का दर्जा दे लेकिन ऐसा नही होता और वह अपने हालात से झुझते हुए जिंदगी गुजारने पर मजबुर होती है। वह मानसिक तनाव का शिकार रहती है। एक सुबह उस का पति रत्न आ कर उसे सुनाता है की कैसे एक बाजारी औरत अपने ग्राहक का दामन पकड कर चिल्ला रही थी के मुझे और पैसे दो और यह कह कर रतन हसने लगता है। दुर्शी ने यह सुन कर सर से पाव तक शोला बनते हुए कहा, ''वह बाबुजी पाजी आदमी है कमिना है और वह बिसवा.... किसी ग्रहस्तन से क्या बुरी है''

''तुम्हारा मतलब है इस जगह में और उस जगह में कोई फरक नही है।'' रतन ने पुछा,

''है क्यो नही यहा बाजार की बनिजबत शोर कम होता है।

बाकर मेहदी इस बारे मे कहते है की यह सच्चाई भरा तेज वाक्य शादी की सारी तकदिस को पाश कर देता है। आज भी मर्द औरतो को हकिर समझते है उन के साथ बुरा बर्ताव किया जाता है। हिन्दुस्तानी औरत जिसको अभी तक आर्थिक आजादी नही मिली इस से ज्यादा कह भी क्या सकती है, जो अपने हक को हासील ना कर पाते हुए भी अपने अधिकारो की जानिव रखती है।

निष्कर्श :–

बेदी को पढने के बाद यह महसुस होता है कि बेदी एक संजिदा और तजरूबेकार अफसाना निगार थे। उनके फन मे बडी गहराई है मगर अथा नही, बडी ऊँचाई है मगर इतनी नही है के निगाह वाह तक ना पहुंच सके। आज स्त्री –पुरूष समानता के नारे लगाऐ जा रहे है और औरतो पर अत्याचार किये जा रहे है। आजादी के नाम पर औरतो को इतना बढावा दिया जा रहा है की उनकी नसवानी खुबसुरती और उनकी फितरत को ही खतम करने की साजीश की जा रही है औरतो को महफल–ए–खाना की बजाए शमा–ए–महफिल बनाने पर जोर दिया जा रहा है। बेदी ने अपने अफसानो के माध्यम से यह बात समाज तक पहुंचा दि है की औरत बढकर भी और गिरकर भी औरत ही बनकर रहना चाहती है। वह देवि बनकर जिंदगी के कुर्ब से अलग रहना नही चाहती। वह सिर्फ उतनी ही आजादी चाहती है जो औरत को औरत बना रहने दे। स्त्री जिंदगी मे कभी खाली हाथ रहना नही चाहती वह अगर किसी के सारे दुख लेने का हौसला रखती है तो यह उम्मीद भी रखती है की उसका जीवन साथी उसे कभी खाली हाथ ने करे। अफसाना 'घर मे बाजार मे' इस माध्यम से बेदी ने स्त्री–पुरूष समानता का पैगाम दिया है। इस प्रकार बेदी ने अपने अफसानो के माध्यम से औरतो के मानसिक और सामाजिक समस्याओं को पेश किया है और उनमे नारी चेतना लाने कि कोशिश की है।

संदर्भ सुची :–

1. डॉ.अतहर परवेज – राजेंद्रसिंह बेदी और उनके अफसाने, ऐज्युकेशन बुक हाउस, अलिगड
2. डॉ.बाकर मेहदी – राजेद्र बेदी– भोला से बबल तक
3. आलअहमद सरूर – बेदी के अफसाने, एक तास्सुर
4. शमसुल हक उसमानी – बेदी नामा पेज नं. 215
5. उर्दु दुनिया – कौमी कॉसील फरोग–ऐ–उर्दु वालुम 17